स्वतंत्र वार्ता

गुरुवार, 11 जुलाई- 2024

फ्रांस में फिर से लाल सलाम

इतिहाल गवाह है कि 14 जुलाई, 1789 की सुबह फ्रांस की राजधानी पेरिस में अराजकता का माहौल पैदा हो गया था। लोग महल के सामने ही बड़ी संख्या में जमा होने लगे थे। सम्राट ने सेना को शहर में घुसने का आदेश दे दिया था। अफवाह थी कि वह सेना को नागरिकों पर गोलियां चलाने का आदेश देने वाला है। करीब 7000 आदमी और औरतें महल के टाउनहॉल में जमा हुए। सभी ने मिलकर राजशाही के प्रतीक बैस्तील के किले की एक दीवार को गिरा दिया। 1774 में फ्रांस में बूर्बो राजवंश का लुई 16वां राजगद्दी पर बैठा। उस वक्त उसकी उम्र महज 20 साल थी। उसकी शादी ऑसट्रिया की राजकुमारी मैरी अंत्वानेत से हुई थी। उस वक्त फ्रांस के महल का खर्च उठाने के लिए आम आदमी से भारी टैक्स वसूले जाते थे। पूरा महल ऐशो-आराम में डूबा रहता और जनता भूखों मरने लगी थी। बैस्तील की दीवार गिराने के साथ ही फ्रांस की महान क्रांति की नींव पड़ी, जिसने दुनिया में लोकतंत्र, स्वतंत्रता और समानता की राह दिखाई। आज 235 साल बाद इसी फ्रांस में हुए आम चुनाव में वामपंथी दलों के गठबंधन न्यू पॉपुलर फ्रंट यानी एनएफपी को सबसे ज्यादा सीटों पर जीत मिली है। फ्रांस के चुनाव से एक महीने पहले तक इस गठबंधन का कोई वजूद नहीं था। चुनाव के ऐलान के बाद सबको चौंकाते हुए कई दलों ने साथ आकर न्यू पॉपुलर फ्रंट के एलायंस ने फ्रांस की संसद में सबसे ज्यादा सीटें जीत लीं। शुरुआत में दक्षिणपंथी नेशनल रैली को बड़ी जीत मिलती नजर आ रही थी। मगर दूसरे चरण में आते-आते वह हार गई। बता दें कि नेशनल रैली के कई सदस्य जर्मन तानाशाह हिटलर का समर्थन करते हैं। कुछ ने चुनाव प्रचार के दौरान मुस्लिमों और यहूदियों के खिलाफ नफरत भरे भाषण भी दिए। इसी को देखते हुए वामपंथी और मध्यम मार्गी पार्टियों ने दक्षिणपंथ को हराने के लिए खास स्ट्रैटेजी अपनाई। चुनाव रैलियों में वामपंथी नेताओं ने कहा कि नेशनल रैली लोगों में नफरत फैला रही है, जो फ्रांसीसी क्रांति और संविधान के समानता के सिद्धांत के खिलाफ है। नतीजतन प्रचार के दौरान ही मध्यम मार्गी गठबंधन के प्रमुख नेता और देश के प्रधानमंत्री गैब्रियल अटाल ने कहा, हमें नेशनल रैली को बहुमत तक पहुंचने से रोकने की जरूरत है, क्योंकि अगर ऐसा होता है तो मैं ये कह सकता हूं कि यह हमारे देश के लिए एक त्रासदी होगी। इसी तरह धुर-वामपंथी दल एलएफआई के एक प्रमुख नेता फ्रांसोइस रुफिन ने कहा, आज हमारा नेशनल रैली को पूर्ण बहुमत से रोकना ही मकसद है। वहीं, सिविल सोसाइटी ने भी कहा कि नेशनल रैली प्रवासियों के खिलाफ नफरत फैलाती है। इसके नेता मुसलमानों और यहूदियों के खिलाफ नस्लीय भाषण देते हैं। फ्रांसीसी क्रांति के बाद समाज में जबरदस्त उथल-पुथल हुआ था। उस युग के दार्शनिकों और राजनैतिक विचारकों को भी लगा कि समाज में व्यवस्था बनाने के लिए समन्यवपूर्ण संरचना जरूरी है। कितने आधुनिक समाज वैज्ञानिकों ने फ्रांसीसी क्रांति के बाद एक नए समाज विज्ञान का निर्माण किया, जिसका मकसद था समन्वयपूर्ण सामाज निर्माण। सिर्फ वैचारिक क्रांति नहीं बल्कि सामाजिक समरसता, सौहार्द और शांति की आवश्यकता को समझा गया था। 1789 में फ्रांसीसी नेशनल असेंबली के सदस्यों ने संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए बैठक की । वे इस बात पर बहस कर रहे थे कि राजा लुई 16वें के पास कितना अधिकार होगा। बहस तेज हो गई और राज-विरोधी क्रांतिकारी पीठासीन अधिकारी के बायीं ओर जुट गए, जबकि रूढ़िवादी कुलीन समर्थक दायीं ओर जमा हो गए। 1790 में अखबारों ने फ्रांसीसी नेशनल असेंबली के प्रगतिशील वामपंथ और परंपरावादी दक्षिणपंथ का जिक्र करना शुरू कर दिया। नेपोलियन बोनापार्ट के शासनकाल में ये भेद मिट गए। 1791 में फ्रांसीसी नेशनल असेंबली को फ्रांसीसी विधान सभा बनी। नवप्रवर्तक बायीं ओर बैठे, नरमपंथी केंद्र में और संविधान के कर्तव्यनिष्ठ रक्षक दायीं ओर बैठे और यह व्यवस्था 1792 तक जारी रही। 1848 में लोगों द्वारा अपनी पार्टी के प्रति निष्ठा दिखाने के लिए 'लोकतांत्रिक समाजवादी' और 'प्रतिक्रियावादी' शब्दों का इस्तेमाल किया जाने लगा। यहीं से पूरी दुनिया में वामपंथ और दक्षिणपंथ शब्द चलन में आया। वामपंथ और दक्षिणपंथ राजनीति के बीच मौलिक अंतर यह है कि जहां वामपंथ समानता, स्वतंत्रता, अधिकार, प्रगति और सुधार पर जोर देता है, वहीं, दक्षिणपंथ कर्तव्य, पदानुक्रम, अधिकार, व्यवस्था, परंपरा और राष्ट्रवाद पर जोर देने का हिमायती है।

लॉजिक और मैजिक

डॉ टी महादेव राव

अब शायद लोगों का तर्क के प्रति नजरिया ही बदला हुआ लगता है। आप चाहे जितनी दलीलें दे दो उनको नहीं मानना है तो नहीं ही मानेंगे।

लॉजिक कहां मिस हो गया पता नहीं। आप अपना माथा फोड़कर भी गलत को गलत साबित नहीं कर सकते। सही को सही सिद्ध नहीं कर पाएंगे। लोगों की सोच और उससे जुड़े कुछ अंधविश्वास हैं कि वे ऐसे हो गए हैं। क्या कहते हो छोटू! आपकी इन बातों में लॉजिक या तर्क या दलील चाहे जो भी हो, मैं नहीं मानता भैया। तुम्हारी अपनी मान्यताएं और विश्वास जरूरी है कि सभी मानें? अगर ऐसा होने लगे तो ज्ञान का जो भंडार हमारे पास व्हाट्सएप, इंस्टा और ट्विटर के माध्यम से आता है, उसका क्या होगा? हम आपकी बातें सीधे सीधे क्यों मान लें? इसलिए कि मेरे दलील में दम है। मेरे तर्क सही हैं और मेरा लॉजिक सही में लॉजिक है।ऐसा तो हर आदमी सोचता है कि वह सही है और सामने वाला गलत है। राजनीति में देखें तो हम भगवान हैं सामने वाला तुच्छ और दुष्ट है। कोर्ट कचहरी में देखे तो बस सड़क पे सांडों जैसे एक दूसरे पर वकील चिल्लाते हैं दलील मनवाने के लिए। नजरिए में फ़र्क की वजह से कोई किसी की बात मानने के लिए तैयार ही नहीं।

सूरज पूरब से उगता है, दो और दो चार होते हैं, चांद रात को निकलता है। इन बातों के लिए तर्क या लॉजिक की क्या जरूरत है छोटू?

बात मत घुमाओ भैया। सार्वजनिक सत्य हैं ये सब। इनका तर्क या लॉजिक से क्या लेना देना, बोलिए।अब जो जीत सकता है यह जानते हुए उसके पास जाकर उसे प्रेरणा देना और हारने वाले को ढाढस बंधाने में फर्क है कि नहीं। बिलकुल नहीं है। जीतने वाले से काम निकलवाना और हारे के आंसू पोंछना जग की रीत है। इसमें फर्क क्या है? चूंकि रावण गलत था, इसके लिए सारे लंकावासी गलत हैं, क्या यह सही है? राम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम अयोध्या में थे इसका मतलब सारी जनता अयोध्या की सज्जन है क्या यह सही है? बिलकुल सही है। जैसे पहले चंबल का मतलब डाकू, लुटेरे, हत्यारे ही होता रहा। खैर अब बदल गया सब कुछ।

अच्छा तो विभीषण, त्रिजटा जैसे अच्छे लोग भी तो थे लंका में। अयोध्या में मंथरा और कैकेई जैसे नकारात्मक चरित्र वाले भी रहे कि नहीं। हर जगह चावल का एक दाना पकड़कर निर्णय देना कि सारा चावल पक गया या नहीं यह नियम काम नहीं करता समझे छोटू? तो भैया जो इतनी देर से मुझे बिठाके पका रहे हो, मैं जान सकता हूं कि किसलिए?

आगामी बजट – फिर जागी सीनियर सिटीजन की उम्मीदें

अशोक भाटिया

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण के बजट से सीनियर सिटीजंस को काफी उम्मीद हैं। वित्तमंत्री 23 जुलाई को लोकसभा में यूनियन बजट पेश करेंगी। इस साल 1 फरवरी को पेश बजट में वित्तमंत्री ने सीनियर सिटीजंस के लिए कोई बड़ा ऐलान नहीं किया था। इसलिए सीनियर सिटीजंस को आने वाले बजट से ज्यादा उम्मीदें हैं ताकि उन्हें पता चल सके कि उनके बटुए में और ज्यादा पैसे आएंगे या नहीं। इनकम टैक्स क़ानून के अनुसार, सीनियर सिटिज़न्स को दो समूहों में बांटा गया है – सीनियर सिटिज़न्स और सुपर सीनियर सिटिज़न्स। इनमें से प्रत्येक समूह के लिए टैक्स सम्बन्धी क़ानून भी अलग-अलग हैं। सीनियर सिटिज़न्स यानी 60 से 80 साल की उम्र के लोगों के लिए 3 लाख रुपये की इनकम तक टैक्स माफ़ है। सुपर सीनियर सिटिज़न्स यानी 80 साल से ज्यादा उम्र के लोगों के लिए 5 लाख रुपये की इनकम तक टैक्स माफ़ है। रिटायर्ड लोग चाहते हैं कि यह अंतर ख़त्म हो जाए क्योंकि कई लोगों के पास, पेंशन और इन्वेस्टमेंट को छोड़कर इनकम का कोई अन्य साधन नहीं है। उनका मानना है कि सबके लिए 5 लाख रुपये की छूट सीमा तय की जानी चाहिए ताकि सभी सीनियर सिटिज़न्स पर टैक्स का बोझ कम हो सके। मौजूदा टैक्स स्लैब के अनुसार, सीनियर सिटिज़न्स को अलग-अलग रेट के हिसाब से टैक्स देना पड़ता है। सीनियर सिटीजंस को उम्मीद है कि वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण हेल्थ इंश्योरेंस के प्रीमियम पर डिडक्शन बढ़ा सकती हैं। अभी 60 साल और इससे ज्यादा उम्र के लोगों को हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी के प्रीमियम पर सालाना 50,000 रुपये डिडक्शन की इजाजत है। बुजुर्गों का कहना है कि पिछले कुछ सालों में खासकर कोविड की महामारी के बाद हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी का प्रीमियम काफी बढ़ गया है। इसलिए सरकार को 50,000 रुपये के डिडक्शन को बढ़ाकर कम से कम एक लाख रुपये कर देना चाहिए। इससे उन पर टैक्स का बोझ घटेगा । सीनियर सिटिज़न्स पर महंगाई का ज्यादा असर पड़ता है। उनके इनकम के साधन सीमित और अक्सर निश्चित होने के कारण, बढ़ती महंगाई के कारण सीधे तौर पर उनकी खरीदने की ताकत कम हो सकती है। उनके पास महंगाई से लड़ने के लिए अपने इनकम को बढ़ाने का कोई तरीका नहीं भी हो सकता है। इसलिए, सरकार उन्हें अधिक से अधिक, महंगाई को मात देने वाले सेविंग्स और इन्वेस्टमेंट ऑप्शंस देने के बारे में सोच सकती है। वर्तमान में, सीनियर सिटिज़न्स सेविंग्स स्कीम में 30 लाख रुपये तक इन्वेस्ट किया जा सकता है जिस पर 8.2 % प्रति वर्ष की दर से सुनिश्चित रिटर्न मिलता है। सरकार इस सीमा को बढ़ाने, ज्यादा रेट ऑफ़ रिटर्न देने और एक कम लॉक-इन फिक्स करने के बारे में सोचना चाहिए । इससे सीनियर सिटिज़न्स की खरीदने की ताकत बढ़ जाएगी और उन्हें बेहतर लिक्विडिटी मिल पाएगी। कई सीनियर सिटीजन की मांग है कि उन्हें चालू ब्याज से 2 प्रतिशत अतिरिक्त ब्याज मिलना चाहिए । वैसे इस समय ऍफ़डी ब्याज दरों की बात करें तो डीसीबी बैंक में सीनियर सिटीजन को एफडी पर 8.6% का ब्याज मिल रहा है। पंजाब एंड सिंध बैंक में सीनियर सिटीजन को एफडी पर 7.9% का ब्याज दे रहा है। ज्यादातर बैंक सीनियर सिटीजन को अधिकतम 7.75 फीसदी का ब्याज दे रहे हैं। इसमें एसबीआई, HDFC, ICICI Bank आदि शामिल हैं। अगर सरकार 2 फीसदी तक ब्याज बढ़ता है तो सीनियर सिटीजन को मिलने वाला ब्याज 10 फीसदी तक जा सकता है जिससे उनके बुढ़ापे की गाड़ी आसानी से चल सकती है ।

वसई पूर्व सीनियर सिटीजन एसोसिएशन के पूर्व जॉइंट सेक्रेटरी आनंद बोंगिरवार के अनुसार सरकार वरिष्ठ नागरिको की बैंक में जमा पूँजी की पूरी राशि की सुरक्षा की गारंटी करें. इसे 5 लाख की सीमा में लॉक अप न किया जाय । देश में चल रहे सभी विमान सेवा द्वारा सीनियर सिटीजन को 50% डिस्काउंट प्रदान किया जाये , विमान सरकारी हो यां गैर सरकारी।इस समय पारिवारिक पेंशन के लिये 65 लाख लोग पेन्शन के लिये लगातार संघर्ष कर रहे है. सभी वरिष्ठ नागरिक को पेन्शन प्रदान किया जाय क्योकि उन्होंने अपने जीवन काल मे बहुत ही कम पैसे मे गुजर किया था और महंगाई बढ़ने पर उनकी जमा पूँजी मे कमी हो गई हैं।इसी प्रकार सीनियर सिटीजन को दांतो की बीमारी के लिए इनकम टैक्स में कोई छूट नहीं मिलती। नकली दाँत बनवाने, और दांतों का इलाज करने की इनकम टैक्स में छूट दी जावे। दांतो के इलाज़ में एक बड़ी धनराशि ख़र्च होती है। मोदी सरकार ने चुनाव के पहले वायदा किया था कि 70 वर्ष से ऊपर के हर वर्ग के सीनियर सिटीजन को आयुष्मान कार्ड दिया जाएगा. इस वायदे को इस बज़ट में मोहर लगाई जाय व उम्र सीमा घटा कर 70 से 60 वर्ष की जाय ।

कोविड से पहले तक सीनियर सिटीजन को ट्रेन टिकट पर 40 से 50 फीसदी तक की छूट दी जाती थी लेकिन ये छूट कोविड के समय खत्म कर दी गई। कोविड का डर खत्म होने के बाद भी सरकार ने इस छूट को फिर से शुरू नहीं किया है। अब सीनियर सिटीजन बजट में ट्रेन टिकट पर 50 फीसदी तक की छूट दिये जाने की डिमांड कर रहे हैं। वह उम्मीद कर रहे हैं कि सरकार उन्हें ये छूट फिर से देना शुरू करेंगे। गौरतलब है कि आईआरसीटीसी सीनियर सिटीजन के लिए स्पेशल एक्सप्रेस ट्रेनों की सभी केटेगरी में रियायती किराए ऑफर करता था। आईआरसीटीसी साल 2019 के अंत तक 60 साल से अधिक उम्र के सीनियर सिटीजन और 58 साल या उससे अधिक उम्र की महिला बुजुर्ग यात्रियों को दुरंतो, शताब्दी, जन शताब्दी, राजधानी, मेल और एक्सप्रेस ट्रेनों के ट्रेन टिकटों पर किराए में छूट देता था। जहां पुरुष वरिष्ठ नागरिक 40 प्रतिशत की रियायत के पात्र थे, वहीं महिला वरिष्ठ नागरिक ट्रेन टिकट पर 50 प्रतिशत की छूट का लाभ उठा सकती थी। साल 2019 के अंत तक सीनियर सिटीजन को ट्रेनों की टिकट की कीमत पर 40 से 50 फीसदी तक की छूट मिली थी। अगर राजधानी का फर्स्ट एसी का टिकट 4,000 रुपये है तो सीनियर सिटीजन को 2,000 या 2,300 रुपये में मिलता था। फिर साल 2019 के अंत और साल 2020 की शुरुआत में कोविड देश और पूरी दुनिया में फैल गया जिसके बाद IRCTC की टिकट बुकिंग विंडो पर ये सर्विस मिलनी बंद हो गई। अब सीनियर सिटीजन उम्मीद कर रहे हैं कि बजट में उन्हें ये खास छूट फिर से मिलेगी।सीनियर सिटीजंस का कहना है कि कई ऐसे बुजुर्ग हैं जिनका अपना घर नहीं है। वे किराया के घरों में रहते हैं। उन्हें हर महीने मकान मालिक को किराया चुकाना पड़ता है। रेगुलर इनकम नहीं होने से उन्हें दिक्कत आती है। सरकार को ऐसे सीनियर सिटीजंस को घर के किराए पर टैक्स डिडक्शन देना चाहिए जिनकी रेगुलर इनकम नहीं है। इससे बुजुर्गों पर टैक्स का बोझ कम होगा। उन्हें उम्मीद है कि वित्तमंत्री इस बार बजट में उनकी यह मांग पूरी करेंगी।

वर्तमान में, मूल कर छूट सीमा वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष से अधिक आयु) के लिए 3 लाख रुपये और बहुत वरिष्ठ नागरिकों (80 वर्ष से अधिक आयु) के लिए 5 लाख रुपये है। यह वह सीमा है जिस तक वरिष्ठ नागरिक की आय पर कर नहीं लगता है। अब, मांग यह है कि बजट में नई कर व्यवस्था में वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष से अधिक) के लिए मूल कर छूट सीमा को 3 लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख रुपये किया जाना चाहिए जो कि बहुत वरिष्ठ नागरिकों (80 वर्ष से अधिक) के समान है।

वरिष्ठ नागरिक आगामी 2024 बजट में संभावित बोनस योजनाओं और कर प्रोत्साहनों को लेकर आशान्वित हैं।

रूस भारत के संबधों को और अधिक प्रगाढ़ करेगा मोदी का दौरा

मनोज कुमार अग्रवाल

रूस भारत के संबधों को और अधिक प्रगाढ़ करेगा मोदी का दौरा

मनोज कुमार अग्रवाल

रूस में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जिस प्रकार से पलक पावडे बिछा कर भव्य स्वागत किया गया है, वह दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक संबंधों को उजागर करता है। अपने तीसरे कार्यकाल की पहली द्विपक्षीय यात्रा पर रूस पहुंचे प्रधानमत्री की यह यात्रा न सिर्फ द्विपक्षी संबंधों के लिहाज से, बल्कि वैश्विक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यही कारण है कि चीन से लेकर अमेरिका तक की निगाहें भारतीय प्रधानमंत्री मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बैठक पर टिकी हुई है। भारत के लिए यह दौरा इसलिए भी महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि एक तरफ नाटो देशों का सम्मेलन हो रहा है तो दूसरी के तरफ घरेलू मोर्चे पर भारतीय मीडिया और विपक्ष चीन की बढ़ती हिमाकत भा को लेकर चिंता व्यक्त कर रहे हैं। अमेरिका में नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी में ऑर्गेनाइजेशन यानी नाठो का सम्मेलन रूस को लेकर ही केंद्रित है, क्योंकि इन रूस और यूक्रेन चीते ढाई साल से युद्ध कर रहे हैं। वर्तमान में पूरी दुनिया म दो पड़ों में बेटी नजर आ रही है। एक तरफ वो देश हैं, जो रूस के खिलाफ ने हैं। दूसरी तरफ यो देश हैं, जो रूस के साथ हैं। इसी लिहाज से नेटो का ये समिट अहम माना जा रहा है। ऐसे में कुछराजनीतिक विशेषज्ञ पीएम मोदी के दौरे को नाटो समिट के जवाब के तौर पर भी देख रहे हैं। हालांकि भारत के तरफ से पहले ही स्पष्ट कर दिया गया है कि यह द्विपक्षीय दौरा है। वैश्विक तनाव के बीच इस बीच देखा जाए तो भारत की कोशिश हमेशा से न्यूट्रल रखने की रही है। भारत ने पिछले कुछ दशकों में वैश्विक शक्ति संतुलन के बीच ये लगातार दिखाया है कि वो ना तो किसी देश का पिछलग्गू है और ना रहेगा, लेकिन अपने हितों से समझौता भी नहीं करेगा। इसी वजह से अमेरिका से लेकर यूरोप के तमाम देशों यहां तक कि यूक्रेन के साथ भी भारत के संबंध सामान्य और कामकाजी बने हुए है, यह उसकी नीतियों का सम्मान है। भारत की इस नीति का परिणाम है कि रूस के साथ भारत मित्रता यथावत है, तो बदलते अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भारत अमेरिका समेत पश्चिम के भी करीब आ चुका है।

हालांकि इसके बावजूद रूस और भारत के संबंधों को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि रूस और चीन के अ बीच की दोस्ती बढ़ रही है, जो भारत का मुख्य प्रतिद्वंदी है। इस त्रिकोणीय रिश्ते की जटिलता तय और साफ हो गई जब पीएम मोदी ने संभाई सहयोग संगठन (एससीओ) के शिखर सम्मेलन में शामिल होने के बजाय अपने कि विदेश मंत्री को कजाकिस्तान के अस्ताना में हुई बैठक में भेजा। इस बैठक में रूसी राष्ट्रपति पुतिन और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भी शामिल थे। संतुलन साधने की इन चुनौतियों चुनौतियों के बीच मोदी की इस यात्रा के कई मायने हैं। सबसे पहले, यह दौरा यह संकेत देता है कि भारत और रूस के के संबंधों में गर्मजोशी बरकरार है, भले ही दुनिया में कितना भी उतार-चढ़ाव हो। दूसरा, यह दौरा भारत के उन प्रयासों को दर्शाता है जो वह अपने विदेश नीति में संतुलन बनाए रखने के लिए कर रहा है, खासकर चीन और अमेरिका जैसे बड़े देशों के साथ। इन सबके बीच यह यात्रा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह 22 वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन की प्रतीक है, जो दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझीदारी में दारी में बातचीत का सबसे बड़ा मंच बन चुका है।

अपनी इस यात्रा के दौरान मोदी और पुतिन द्वारा भारत-रूस संबंधों से जुड़े तमाम पहलुओं की समीक्षा करेंगे। आपसी हितों से जुड़े मुद्दों पर बात करने के साथ ही वैश्विक मुद्दों और इससे जुड़ी चुनौतियों पर विचारों का आदान- प्रदान करेंगे। इस यात्रा में दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग समेत कई तरह के समझौते भी होंगे। रूस भारत के लिए सैन्य उपकरणों का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता है। साथ ही व्यापार और ऊर्जा संबंधों पर समझौतों को और आगे बढ़ाया जाएगा। पीएम अपनी रूस यात्रा के दौरान व्लादिमीर पुतिन के साथ क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा, यूक्रेन रूस युद्ध, रक्षा, तेल और गैस द्विपक्षीय संबंध, व्यापार और ऊर्जा जैसे अहम क्षेत्रों पर बात करेंगे। दोनों नेताओं के बीच रूस पर प्रतिबंधों के चलते भुगतान मुद्दा हल करने, रक्षा हार्डवेयर की आपूर्ति, प्रस्तावित चेन्नई व्लादिवोस्तोक मैरिटाइम कॉरिडोर में निवेश पर चर्चा के अलावा यूक्रेन में रूस की ओर से लड़ रहे भारतीयों के सी संवेदनशील मुद्दे पर भी बातचीत संभव है। पीएम मोदी का रूस दौरा भारत के रक्षा क्षेत्र के नजरिए से काफी अहम साबित हो सकता है। रूस भारत को नई वायु रक्षा प्रणाली और एसयू 30 एमकेआई लड़ाकू जेट, साथ ही केए-226टी बहुउद्देशीय हेलीकॉप्टरों के लाइसेंस प्राप्त उत्पादन की आपूर्ति कर सकता है। भारत रूस से एक दर्जन लड़ाकू विमान खरीदने पर विचार कर रहा है। शिखर सम्मेलन में पीएम मोदी और पुतिन के बीच फाइटर जेट एसयू-57, एंटी टैंक गोले की फैक्ट्री डोल, मैंगो आर्मर पियर्सिंग टैंक राउंड की फैक्ट्री डील, मिलिट्री लॉजिस्टिक्स समझौता हो सकता है। इस दौरे से पहले ब्लूमबर्ग ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि भारत और रूस संयुक्त रूप से 5वीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान विकसित करने के लिए समझौता कर सकते हैं। इस दौरे में एस-400 वायु रक्षा मिसाइलों की आपूर्ति को दोबारा शुरू करने के भारत के अनुरोध पर भी चर्चा होने की उम्मीद है। 30 किमी की ऊंचाई के साथ 400 किमी तक की मारक क्षमता वाले एस- 400 के लिए 2018 में समझौता हुआ था। पांच अरब डॉलर की इस डील में भारत ने पांच एस-400 मिसाइल का ऑर्डर दिया है। इनमें से तीन की डिलीवर की जा चुकी है जबकि दो अभी बाकी है। सतह से हवा में मार करने वाला यह मिसाइल सिस्टम विमान, ड्रोन, क्रूज और बैलिस्टिक मिसाइल के हवाई हमलों को रोक सकता है। इसके अलावा दोनों नेताओं के बीच बीच मुख्य फोकस व्यापार असंतुलन को बेहतर करने पर भी हो सकता है। रूस से भारत को तेल और ऊर्जा उत्पादों में काफी वृद्धि से व्यापार घाटा बढ़ता जा जा रहा है। भारत से रूस को होने वाले निर्यात को यो गति नहीं मिल पाई है। रूस के साथ भारत का व्यापार घाटा 2022-23 में 43 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2023-24 में 57.2 बिलियन डॉलर हो गया। 2023 की पहली तिमाही में भारत को रूस के साथ 14.7 अरब डॉलर का व्यापार घाटा हुआ सा था। रूस भारत के लिए तेल के एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में उभरा है, लेकिन रूस को भारत का निर्यात बढ़ते आयात के साथ तालमेल नहीं रख पाया है, जिससे एक बड़ा और बढ़ता व्यापार असंतुलन पैदा हो गया है। इसके अलावा भारत सरकार कृषि, उद्योग, फार्मास्यूटिकल्स और अन्य ऊर्जा सेवाओं सहित विभिन्न क्षेत्रों में रूस को निर्यात बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। इसे बढ़ाने को लेकर इस यात्रा में खास फैसला हो सकता है। कुल मिलाकर देखा जाए तो रूस और भारत दोनों देशों के लिए रणनीतिक और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने का एक अवसर है, खासकर तब जब पश्चिमी प्रतिबंधों ने रूस को कई तरह की चुनौतियों का सामना करने के लिए मजबूर कर दिया है। ऐसे में माना जा रहा है कि मोदी की यह यात्रा दोनों देशों के बीच मील का पत्थर साबित होगी और दोनों देशों के बीच रिश्ते में प्रगाड़ता और बढ़ेगी।

अजब गाँव की गजब कहानी

सुरेश मिश्रा

गाँव का नाम था पिटायापुर, जहाँ पिटाई का बड़ा महत्व था। वहाँ के लोग मानते थे कि अगर कोई समस्या है, तो उसका हल केवल पिटाई से ही हो सकता है। गाँव के घरों में बच्चे उधम मचाते थे, तो माता-पिता का हथियार था—दो तमाचे। अरे सुनो, रामु, तुम्हारे पिताजी की छड़ी कहाँ है? माँ ने पूछा। उधर बच्चे उधम मचा रहे हैं। रामु, 10 साल का छोटा लड़का, जो पिटाई के महत्व को भलीभाँति समझ चुका था, चुपचाप अपने कमरे में छड़ी खोजने चला गया। माँ, मिल गई! और फिर देखते ही देखते बच्चों की सारी उधमबाज़ी पिटाई ,से शांत हो गई। पिटाई के बाद बच्चा चुप हो गया और उसकी माँगें जैसे ठंडे बस्ते में डाल दिए गए हों। फिर आते हैं हमारे नायक, वीरू। वीरू गाँव का सबसे बड़ा सिनेमा प्रेमी था। वह हर शुक्रवार को नई फ़िल्में देखने जाता, खासकर वे जिनमें मार-धाड़ के दृश्य होते। जब अभिनेता विलेन को पीटता, तो वीरू के चेहरे पर मुस्कान फैल जाती। और मारो, और मारो! वह चिल्लाता। वीरू को ऐसा लगता मानो वह खुद लड़ाई के मैदान में खड़ा हो। गाँव के लोग राम-रावण युद्ध और महाभारत की कहानियों को बड़े चाव से सुनते। भाई-भाई का झगड़ा हो या दंगा-फसाद, सबमें पिटाई ही असली उपाय है, गाँव के पंडित जी अक्सर कहा करते। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भी युद्ध के महत्व के बारे में बताया है।

फिर गाँव में एक दिन कर्फ्यू लगा। उपद्रवियों को ठीक करने का यही तरीका है, पुलिस वाले कहते। भय बिनु होइ न प्रीति,तुलसीदास जी भी यही कहते थे। आधुनिक युग में पिटाई शास्त्र की शुरूआत स्कूलों से होती है। मास्टरजी छड़ी लेकर आते और बच्चों को प्रश्न पूछने से रोकते। पढ़ाई के सवाल पूछोगे तो पिटाई होगी, वह धमकाते। गाँव में एक और प्रसिद्ध व्यक्ति थे, कवि गोपाल सिंह। उन्होंने भी पिटाई के महत्व को समझा। ओ राही दिल्ली जाना तो कहना अपनी सरकार से चरखा चलता है हाथों से शासन चलता तलवार से, उन्होंने कविता में कहा। एक दिन वीरू शहर के चौराहे पर बिना हेलमेट के पकड़ा गया। बिना हेलमेट के वाहन चलाओगे तो पिटाई होगी, पुलिस वाले ने कहा। वीरू को पिटाई हुई और उसने हेलमेट पहनने का महत्व समझ लिया। एक दिन गाँव में बड़ा दंगा हुआ। पिटाई की आवाज़ें हर ओर गूंज रही थीं। वीरू, मास्टरजी, और पंडित जी सब इस दंगे में घायल हो गए। पिटायापुर में शांति लौट आई, लेकिन वह शांति नहीं जो प्रेम से आती है, बल्कि वह जो भय और पिटाई से आई थी। गाँव के लोग समझ चुके थे कि पिटाई शास्त्र का महत्व है, लेकिन उसकी कीमत बहुत भारी होती है।

मतांतरण पर व्यापक बहस की जरूरत

मुनीष त्रिपाठी

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने हाल ही में मतांतरण के मुद्दे पर एक महत्वपूर्ण निर्णय दिया है, जिसने समाज में व्यापक चर्चा और बहस को जन्म दिया है। इस निर्णय के तहत, कोर्ट ने स्पष्ट रूप से कहा कि किसी भी प्रकार का जबरन या धोखाधड़ी से मतांतरण अवैध और असंवैधानिक है। बीते 2 जुलाई को इलाहाबाद हाई कोर्ट ने मतांतरण को लेकर गंभीर टिप्पणी की है 1 कोर्ट ने कहा है कि यदि धार्मिक सभाओं में मतांतरण की प्रवृत्ति जारी रही तो एक दिन भारत की बहुसंख्यक आबादी ही अल्पसंख्यक हो जायेगी 1 न्यायाधीश रोहित रंजन अग्रवाल ने हिंदुओं को ईसाई बनाने के आरोपी मौदहा हमीरपुर के कैलाश की जमानत अर्जी को खारिज करते हुए आदेश दिया है 1 कोर्ट ने कहा कि लोगों को धर्म के प्रचार प्रसार की छूट है लेकिन धर्म बदलने की अनुमति नहीं है 1 ऐसे आयोजन संविधान के अनुच्छेद 25 द्वारा प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के विरुद्ध हैं 1

भारत एक पंथनिरपेक्ष देश है, जहां सभी धर्मों को समान अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त है। संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म का पालन, प्रचार और प्रसार करने का अधिकार है। हालांकि, यह अधिकार पर्याप्त नहीं है और इसके कुछ प्रतिबंध हैं। यह निर्णय संविधान के इसी अनुच्छेद की व्याख्या के संदर्भ में आया है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि किसी व्यक्ति का मतांतरण उसकी स्वेच्छा और स्वतंत्र इच्छा से होना चाहिए। जबरन, धोखाधड़ी या लालच देकर किया गया धर्मांतरण अवैध है। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि मतांतरण एक गंभीर और व्यक्तिगत मामला है, और इसे किसी भी प्रकार की सामाजिक, आर्थिक या अन्य प्रकार की मजबूरी से प्रभावित नहीं होना चाहिए। इस निर्णय का समाज पर व्यापक रूप से प्रभाव पड़ेगा । इससे यह स्पष्ट संदेश गया है कि मतांतरण का अधिकार सिर्फ तभी है जब वह स्वेच्छा से और बिना किसी दबाव के किया जाए। यह निर्णय विशेष रूप से उन मामलों में महत्वपूर्ण है जहां गरीब और कमजोर वर्गों के लोगों का जबरन या धोखाधड़ी से मतांतरण किया जाता है। कोर्ट ने बेहद तल्ख टिप्पणी में मतांतरण के कारण बहुसंख्यकों के अल्पसंख्यक होने की चिंता जाहिर की है 1

कानूनी दृष्टिकोण से, यह निर्णय एक महत्वपूर्ण मिसाल स्थापित करता है। यह स्पष्ट करता है कि मतांतरण के अधिकार का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए और इसे केवल उन परिस्थितियों में ही मान्यता दी जाएगी जब यह पूर्णतः स्वेच्छा से किया गया हो। इससे भविष्य में मतांतरण के विवादों में एक महत्वपूर्ण संदर्भ मिलेगा। इलाहाबाद हाईकोर्ट का यह निर्णय भारतीय समाज और कानून में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह न केवल मतांतरण के मामलों में एक स्पष्ट दिशा-निर्देश प्रदान करता है, बल्कि समाज में धार्मिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा भी सुनिश्चित करता है। इस फैसले से यह उम्मीद की जा सकती है कि भविष्य में मतांतरण के मामलों में न्याय और पारदर्शिता बनी रहेगी, और सभी धर्मों के लोग अपने धार्मिक विश्वासों का पालन स्वतंत्रता से कर सकेंगे।

भारत में मतांतरण की घटनाएं लंबे समय से विवाद का विषय रही हैं। मतांतरण का मुद्दा धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। इतिहास में विभिन्न धार्मिक समूहों द्वारा मतांतरण की गतिविधियाँ देखी गई हैं 1 1981 में मीनाक्षीपुरम धर्मांतरण एक सामूहिक धार्मिक रूपांतरण था जो तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम गाँव में हुआ था, जिसमें 200 से 300 परिवारों के सैकड़ों दलित जाति के हिंदुओं ने इस्लाम धर्म अपना लिया था। इस घटना ने भारत में धर्म की स्वतंत्रता पर बहस छेड़ दी थी । स्वाधीनता के बाद यह भारत में सबसे बड़ी मतांतरण की घटना थी जिसने पूरे देश को झकझोर दिया था 1 भारत की स्वाधीनता के बाद 1956 में मध्य प्रदेश सरकार ने पहली बार मतांतरण की घटनाओं की जांच के लिए एक समिति का गठन किया, जिसे 'नियोगी समिति' के नाम से जाना जाता है। इस समिति का अध्यक्ष भवानी शंकर नियोगी थे। समिति ने अपनी रिपोर्ट में विभिन्न धार्मिक संगठनों और मिशनरियों द्वारा मतांतरण की गतिविधियों का विस्तृत विश्लेषण किया। नियोगी समिति की रिपोर्ट में पाया गया कि मतांतरण के मुख्य कारण गरीबी, शिक्षा की कमी और चिकित्सा सुविधाओं की कमी थे। मिशनरियों द्वारा इन सुविधाओं का लालच देकर मत परिवर्तन कराया जाता था।

रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया कि कई धार्मिक संगठनों ने अपने धर्म के प्रचार के लिए आर्थिक और सामाजिक मदद का सहारा लिया। विशेष रूप से ईसाई मिशनरियों द्वारा स्कूल, अस्पताल और अन्य सामाजिक सेवाओं का उपयोग करके मतांतरण की गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया। समिति ने सुझाव दिया कि मतांतरण की गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए कानून बनाए जाएं। इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए उपाय शामिल थे कि किसी भी व्यक्ति का मत परिवर्तन उसकी स्वेच्छा से हो, न कि किसी दबाव या लालच के कारण।

टीम इंडिया को शुभमन गिल वॉशिंगटन ने दिलाई सुंदर जीत

23 रनों से हारा जिम्बाब्वे

हरारे, 10 जुलाई (एजेंसियां)। हरारे में खेले गए तीसरे टी20 मुकाबले में टीम इंडिया ने शानदार जीत दर्ज की. टीम इंडिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 182 रनों का विशाल स्कोर बनाया, जवाब में मेजबान टीम इस बड़े लक्ष्य को हासिल नहीं कर पाई.

पहला मैच गंवाने के बाद टीम इंडिया ने हरारे में जीत को मानो आदत बना लिया है. दूसरे टी20 में 100 रनों से जीत के बाद अब टीम इंडिया ने तीसरे टी20 में भी जिम्बाब्वे को हरा दिया. हरारे में खेले गए मुकाबले में टीम इंडिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20

ओवर में 182 रन बनाए, जवाब में जिम्बाब्वे की टीम ने अच्छी टक्कर दी लेकिन वो लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाई. इस जीत के साथ ही टीम इंडिया अब टी20 सीरीज में 2-1 से आगे हो गई है. टी20 सीरीज का अगला मैच शनिवार को खेला जाएगा.

शुभमन-वॉशिंगटन ने दिलाई जीत

टीम इंडिया की जीत के हीरो कप्तान शुभमन गिल और ऑफ स्पिनर वॉशिंगटन सुंदर रहे.शुभमन गिल ने 49 गेंदों में 66 रनों की पारी खेली. वहीं वॉशिंगटन सुंदर ने 4 ओवर में महज 15 रन देकर 3 विकेट झटके. इन दोनों खिलाड़ियों के अलावा ऋतुराज गायकवाड़ ने 28 गेंदों में 49 रनों की पारी खेल टीम इंडिया की जीत में अहम योगदान दिया.

गौतम गंभीर के बाद अब जहीर खान की होगी टीम इंडिया में एंट्री, बनेंगे बॉलिंग कोच?

मुंबई, 10 जुलाई (एजेंसियां)। गौतम गंभीर टीम इंडिया के हेड कोच बन गए हैं, बीसीसीआई के सचिव जय शाह ने उनके नाम का ऐलान किया. लेकिन अब सवाल ये है कि आखिर उनकी कोचिंग टीम में और कौन-कौन शामिल होने वाला है? ऐसी खबरें हैं कि गौतम गंभीर की कोचिंग टीम में नए बैटिंग कोच, बॉलिंग कोच जुड़ने वाले हैं. इन पदों के लिए कई बड़े खिलाड़ियों का नाम सामने आ रहा है. बड़ी खबर ये है कि साल 2011 में टीम इंडिया को वर्ल्ड कप जिताने वाले तेज गेंदबाज जहीर खान बॉलिंग कोच बनने की रेस में हैं.

जहीर खान बनेंगे टीम इंडिया के बॉलिंग कोच?

एएनआई की रिपोर्ट के मुताबिक जहीर खान टीम इंडिया के बॉलिंग कोच बनने की रेस में हैं. सिर्फ जहीर ही नहीं पूर्व तेज गेंदबाज लक्ष्मीपति बालाजी भी टीम इंडिया के बॉलिंग कोच बनने के दावेदार हैं. वैसे इस पद के लिए एक और दावेदार है और वो हैं पूर्व तेज गेंदबाज विनय कुमार.

जहीर खान कोच बने तो होगा बड़ा फायदा

जहीर खान अगर टीम इंडिया के बॉलिंग कोच बनते हैं तो इससे रोहित एंड कंपनी को बहुत फायदा होगा. वो इसलिए क्योंकि जहीर खान को इंटरनेशनल क्रिकेट का लंबा अनुभव रहा है. उन्होंने दुनिया के हर कोने में क्रिकेट खेला है. साथ ही वो टीम के सिस्टम को अच्छी तरह पहचानते हैं. वो टीम और खिलाड़ियों को मैनेज करने का काम बखूबी पहचानते हैं. जहीर खान ने टीम इंडिया के लिए 200 वनडे में 282 विकेट हासिल किए हैं. इसके अलावा उन्होंने 92 टेस्ट में 311 विकेट झटके हैं. आईपीएल में भी उन्होंने 100 मुकाबलों में 102 विकेट हासिल किए. आने वाले 2 सालों में टीम इंडिया को 5 आईसीसी टूर्नामेंट्स में हिस्सा लेना है. जिसमें चैंपियंस ट्रॉफी, वनडे वर्ल्ड कप, टी20 वर्ल्ड कप और दो टेस्ट चैंपियनशिप शामिल हैं.

अभिषेक नायर की एंट्री पक्की?

जहीर खान टीम इंडिया के बॉलिंग कोच बनेंगे या नहीं ये तो अभी साफ नहीं हुआ है लेकिन अभिषेक नायर जरूर बैटिंग कोच बन सकते हैं. अभिषेक नायर केकेआर के असिस्टेंट कोच रहे हैं और साथ ही उन्हें भी फर्स्ट क्लास क्रिकेट का लंबा अनुभव है. जल्द ही टीम इंडिया के नए कोचिंग स्टाफ की तस्वीर साफ हो जाएगी.

विराट कोहली के साथ रुतुराज गायकवाड़ की हो रही तुलना

बल्लेबाज ने दिया बड़ा बयान

मुंबई, 10 जुलाई (एजेंसियां)। टी20 विश्व कप 2024 का खिताब जीतने के बाद विराट कोहली ने टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लेने का ऐलान कर दिया था। विराट को साथ-साथ रोहित शर्मा और रवींद्र जडेजा ने भी संन्यास ले लिया था। इन तीनों सीनियर खिलाड़ियों की गैरमौजूदगी में अब टीम इंडिया जिम्बाब्वे के साथ टी20 सीरीज खेल रही है। इस सीरीज में युवा खिलाड़ी अपना दमखम दिखा रहे हैं। इस सीरीज में तीसरे नंबर पर रुतुराज गायकवाड़ बल्लेबाजी कर रहे हैं। गायकवाड़ कमाल के बल्लेबाज हैं, अब उनकी तुलना विराट कोहली से भी होने लगी है। जिसके बाद खुद गायकवाड़ ने इस सवाल का जवाब दिया है।

गायकवाड़ का बड़ा बयान

जिम्बाब्वे के खिलाफ पहले मैच में फ्लॉप होने के बाद दूसरे टी20 मुकाबले में रुतुराज गायकवाड़ ने तीसरे नंबर पर आकर कमाल की बल्लेबाजी का नजारा पेश किया था। विराट कोहली के टी20 इंटरनेशनल से संन्यास लेने के बाद अब गायकवाड़ के सामने कोहली की कमी को पूरा करने की चुनौती होगी। वहीं कुछ फैंस अभी से गायकवाड़ की तुलना कोहली से करने लगे हैं।

जिस पर अब खुद गायकवाड़ ने बड़ा बयान दिया है। कोहली से तुलना को लेकर गायकवाड़ ने कहा कि ये काफी बड़ा विषय है और इस पर इतना सोचने की जरूरत नहीं है। उनकी जगह को भरना वास्तव में उतना आसान नहीं है। अभी अपने करियर, अपने खेल पर ध्यान देने की जरूरत है। सिर्फ टीम को जिताने के बारे में सोचना है।

गायकवाड़ पर कोहली की जगह को भरने का दबाव

विराट कोहली दुनिया के महान बल्लेबाजों में से एक हैं। उनकी क्लास, उनकी कवर ड्राइव का हर कोई फैन है। हालांकि कोहली टी20 इंटरनेशनल से संन्यास ले चुके हैं। संन्यास के दौरान खुद कोहली ने कहा था कि अब युवा खिलाड़ियों के दौर का समय आ गया है और उनको ही टीम इंडिया को आगे बढ़ाना है। अब टी20 इंटरनेशनल में गायकवाड़ को तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने की जिम्मेदारी मिली है। ऐसे में गायकवाड़ पर थोड़ा दबाव जरूर होगा।

पहले गौतम गंभीर ने केकेआर को छोड़ा

अब शाहरुख खान की टीम को मिली एक और बुरी खबर

नई दिल्ली, 10 जुलाई (एजेंसियां)। शाहरुख खान और गौतम गंभीर के बीच एक जबरदस्त बॉन्डिंग है. गंभीर कई इंटरव्यू में इस बात का जिक्र भी कर चुके हैं. वहीं शाहरुख भी उनकी तारीफ करते नहीं थकते हैं. उनकी टीम कोलकाता नाइट राइडर्स ने गंभीर के रहते हुए ही आईपीएल की 3 ट्रॉफी जीती है. गंभीर ने पहले कप्तान रहकर, फिर मेंटॉर के तौर पर केकेआर को आईपीएल का विजेता बनाया. गंभीर ने टीम इंडिया की खातिर अब उन्हें और उनकी टीम को अलविदा कह दिया है. इससे शाहरुख की टीम को बड़ा झटका लगा है. इतना ही नहीं गंभीर के जाते ही टीम के लिए अमेरिका से एक और बुरी खबर आई है.

अमेरिका में हारी शाहरुख की टीम

आईपीएल की तरह अमेरिका में मेजर लीग क्रिकेट (एमएलसी) का आयोजन किया जाता है. इस लीग में शाहरुख खान की फ्रेंचाइजी लॉस एंजेलिस नाइट राइडर्स के नाम से खेलती है. 5 जुलाई से इसका दूसरा सीजन शुरू हो चुका है. 9 जुलाई को बीसीसीआई ने गौतम गंभीर को टीम इंडिया का हेड कोच बनाने का ऐलान किया और उधर एमएलसी 2024 में एंजेलिस नाइट राइडर्स बुरी तरह से हार गई. इतना ही नहीं इस मैच में टीम के दो सबसे अहम खिलाड़ी सुनील नरेन और आंद्रे रसेल भी फेल हो गए. आईपीएल 2024 में इन दोनों ने कोलकाता नाइट राइडर्स की जीत में एक अहम भूमिका निभाई थी.

नरेन-रसेल हुए फेल

लॉस एंजेलिस नाइट राइडर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 168 रन बनाए थे. इसमें जेसन रॉय और डेविड मिलर ने शानदार बल्लेबाजी की. जेसन रॉय ने 52 गेंद में 69 तो और मिलर 22 गेंद में 44 रन बनाए. वहीं केकेआर की तरह यहां ओपनिंग करने आए सुनिल नरेन 6 गेंद में केवल 5 रन बना सके. इसके अलावा आंद्रे रसेल 10 गेंद में केवल 14 रन बनाकर आउट हो गए. सिएटल ऑर्कास की टीम ने 169 के लक्ष्य को केवल एक विकेट के नुकसान पर 5 गेंद रहते ही चेज कर लिया. इस दौरान रेयान रिकेलटन ने शानदार 66 गेंद में 103 रन की पारी खेली. इतना ही नहीं शाहरुख की टीम MLC में 3 मैच में केवल 1 ही जीत सकी है. बता दें कि MLC में कुल 6 टीमें हिस्सा लेती हैं. इनमें से टॉप-4 टीमें प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई करती हैं. फिर आईपीएल की तरह ही क्वालिफायर और एलिमिनेटर मुकाबला होता है. फिलहाल एंजेलिस नाइट राइडर्स पॉइंट्स टेबल में चौथे स्थान पर है.

भारतीय मूल के खिलाड़ी की न्यूजीलैंड में खुली किस्मत

मिला क्रिकेट करियर का पहला सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट

वेलिंगटन, 10 जुलाई (एजेंसियां)। न्यूजीलैंड क्रिकेट बोर्ड ने 2024-25 के सीजन के लिए सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट का ऐलान कर दिया है. इस बार न्यूजीलैंड क्रिकेट ने 20 खिलाड़ियों को कॉन्ट्रैक्ट देने का फैसला किया है. केन विलियमसन, लोकी फर्ग्यूसन और एडम मिल्ने जैसे बड़े खिलाड़ी इस सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट का हिस्सा नहीं हैं. वहीं, कुछ युवा खिलाड़ियों को पहली बार इस लिस्ट में शामिल किया गया है, जिसमें भारतीय मूल का एक खिलाड़ी भी शामिल है.

भारतीय मूल के खिलाड़ी को मिला न्यूजीलैंड का सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट

भारतीय मूल के खिलाड़ी रचिन रवींद्र को उनका पहला सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट मिल गया है. बाएं हाथ के बल्लेबाज रचिन रवींद्र के लिए पिछला एक साल काफी शानदार रहा, उन्होंने तीनों फॉर्मेट में कमाल का प्रदर्शन किया. रवींद्र 2023 वनडे वर्ल्ड कप के स्टार थे, उन्होंने 578 रन बनाए थे और फिर माउंट माउंगानुई में साउथ अफ्रीका के खिलाफ अपना पहला टेस्ट शतक बनाया था, जिसे दोहरे शतक में भी तबदील किया था. वह मार्च में सर रिचर्ड हैडली

मेडल जीतने वाले न्यूजीलैंड के सबसे युवा खिलाड़ी बने थे.

रचिन रवींद्र का छोटे से करियर में बड़ा कमाल

बता दें, रचिन रवींद्र के पिता सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं और वे 90 के दशक में बैंगलोर से न्यूजीलैंड में शिफ्ट हुए थे. जिसके चलते रचिन रवींद्र न्यूजीलैंड की टीम के लिए खेलते हैं. उन्होंने न्यूजीलैंड के लिए अभी तक 7 टेस्ट, 25 वनडे और 23 टी20 मैच खेले हैं. टेस्ट में उन्होंने 39.92 की औसत से 519 रन बनाए हैं. वनडे में वह 41.00 की औसत से 820 रन बना चुके हैं और टी20 में भी उन्होंने 231 रन बनाए हैं. वह अपने इंटरनेशल करियर में अभी तक 4 शतक लगा चुके हैं.

इन खिलाड़ियों की भी खुली किस्मत

रचिन के अलावा बेन सियर्स, विल ओ'रुरके और जैकब डफी को भी पहली बार सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट में शामिल किया गया है. जबकि बाएं हाथ के स्पिनर एजाज पटेल की इस लिस्ट में वापसी हुई है. हेनरी निकोल्स ने पिछले सीजन में टेस्ट टीम से बाहर होने के बावजूद अपना कॉन्ट्रैक्ट बरकरार रखा है.काइल जैमीसन भी इस लिस्ट का हिस्सा हैं.

न्यूजीलैंड सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट 2024-25 की लिस्ट

फिन एलन, टॉम ब्लंडेल, माइकल ब्रेसवेल, मार्क चैपमैन, डेवोन कॉनवे, जैकब डफी, मैट हेनरी, काइल जैमीसन, टॉम लैथम, डेरिल मिशेल, हेनरी निकोल्स, विल ओ'रुरके, एजाज पटेल, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रवींद्र, मिशेल सेंटनर, बेन सियर्स, ईश सोढ़ी, टिम साउथी, विल यंग.

कोपा अमेरिका 2024

मेसी ने दागा 109वां गोल

कनाडा को हराकर अर्जेंटीना कोपा अमेरिका के फाइनल में

ईस्ट रदरफोर्ड, 10 जुलाई (एजेंसियां)। लियोनेल मेसी के अपने करियर के 109वें अंतरराष्ट्रीय गोल और वर्तमान टूर्नामेंट के पहले गोल के दम पर गत चैंपियन अर्जेंटीना ने कनाडा को 2-0 से हराकर कोपा अमेरिका फुटबॉल टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया।

अर्जेंटीना की तरफ से जूलियन अल्वारेज ने 22वें मिनट में पहला गोल किया, जबकि मेसी ने 51वें मिनट में एन्जो फर्नांडीज के शॉट को गोल में भेज कर उसकी बढ़त दोगुनी की। मेसी के सामने तब गोलकीपर मैक्सिम क्रेप्यू थे लेकिन इस स्टार फुटबॉलर के आगे उनकी एक नहीं चली।

मेसी ने अर्जेंटीना के लिए अपने पिछले 25 मैचों में 28 गोल किए हैं। वह कोपा अमेरिका में अब तक 14 गोल कर चुके हैं जो रिकॉर्ड से तीन गोल कम हैं। अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में मेसी से अधिक गोल पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो के नाम पर दर्ज हैं जिन्होंने अभी तक 130 गोल किए हैं। ईरान के अल देई के नाम 1993 से 2006 तक 108 या 109 गोल दर्ज हैं। इक्वाडोर के खिलाफ 2000 में किए गए उनके गोल को लेकर विवाद है क्योंकि इस मैच के अंतरराष्ट्रीय दर्जे को लेकर मतभेद हैं।

अर्जेंटीना ने यह जीत अपने स्वतंत्रता दिवस पर हासिल की जिससे उसका अजेय अभियान 10 मैच तक पहुंच गया है। अर्जेंटीना रविवार को होने वाले फाइनल में उरुग्वे या कोलंबिया का सामना करके रिकॉर्ड 16वां कोपा खिताब जीतने की कोशिश करेगा।

भारतीय एथलीटों को मिलेगा जेब खर्च?

आईओए की कार्यकारी परिषद ने कही ये बात

नई दिल्ली, 10 जुलाई (एजेंसियां)। पेरिस ओलंपिक की शुरुआत होने में अब चंद दिन शेष रह गए हैं और भारतीय एथलीट इसके लिए तैयार हैं। भारत इस बार भी ओलंपिक में 100 से अधिक सदस्यों का दल भेज रहा है और उम्मीद है कि देश को पिछली बार की तुलना में और बेहतर सफलता मिलेगी। भारतीय एथलीटों को इस दौरान पेरिस में जेब खर्च मिलने का मामला काफी चर्चा में है, लेकिन भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की कार्यकारी परिषद (ईसी) पेरिस ओलंपिक में खेलने जा रहे भारतीय खिलाड़ियों को प्रति दिन 50 अमेरिकी डॉलर (लगभग चार हजार रुपये) का जेब खर्च देने के पक्ष में नहीं है।

ईसी का मानना है कि जब ओलंपिक के दौरान खिलाड़ियों को खेल मंत्रालय दैनिक जेब खर्च दे रहा है तो आईओए को यह भत्ता देने की जरूरत नहीं है। इससे पहले ईसी सदस्यों ने ओलंपिक के दौरान उन्हें मिलने वाला 300 डॉलर प्रतिदिन (लगभग 25 हजार रुपये) का दैनिक भत्ता लेने से इन्कार कर दिया था। आईओए की ओर से ओलंपिक के बजट में खिलाड़ियों को 50 और ईसी सदस्यों को 300 डॉलर प्रति दिन का जेब खर्च प्रस्तावित था। टोक्यो ओलंपिक के दौरान भी यही जेब खर्च खिलाड़ियों और ईसी सदस्यों को दिया गया था।

ओलंपिक बजट पास करने के लिए 30 जून को बुलाई गई कार्यकारी परिषद की बैठक में सदस्यों ने अपना दैनिक भत्ता लेने से इन्कार कर दिया, लेकिन यह भी कहा कि किसी को भी दोहरा जेब खर्च देना नहीं बनता है। खेल मंत्रालय पहले से ही खिलाड़ियों को एशियाई, राष्ट्रमंडल और ओलंपिक में 50 डॉलर का दैनिक जेब खर्च देता आ रहा है। ऐसे में आईओए की ओर से भी जेब खर्च दिए जाने का प्रावधान नहीं होना चाहिए। ईसी ने कहा कि खिलाड़ियों को जेब खर्च दिए जाने का प्रस्ताव खेल मंत्रालय को भेजा जाना चाहिए।

प्रशिक्षकों को भी मिलेगी इनामी राशि

पदक विजेताओं के प्रशिक्षकों को भी ईनामी राशि देने का फैसला किया गया है। आईओए ओलंपिक में स्वर्ण जीतने वाले को एक करोड़, रजत जीतने वाले को 75 लाख और कांस्य जीतने वाले को 50 लाख रुपये का नकद पुरस्कार देगा, लेकिन ईसी ने उनके प्रशिक्षकों को भी इनामी राशि देने का फैसला लिया है। ओलंपिक में जो प्रशिक्षक पदक विजेता के साथ होगा, उसी को कोच माना जाएगा। स्वर्ण पदक पर प्रशिक्षक को 25 लाख, रजत पर 20 और कांस्य पर 15 लाख रुपये दिए जाएंगे। टीम इवेंट के लिए आईओए ने क्रमशः दो करोड़, एक करोड़ और 75 लाख रुपये निर्धारित किए थे, लेकिन ईसी ने सरकारी नियमों के अनुसार टीम पदक विजेताओं को इनामी राशि दिए जाने को कहा।

फ्रांस को हराकर स्पेन यूरो कप 2024 के फाइनल में

16 साल के स्पैनिश फुटबॉलर यमाल ने रचा इतिहास

बर्लिन, 10 जुलाई (एजेंसियां)। 16 वर्षीय लामेन यमाल यूरो कप फुटबॉल टूर्नामेंट के इतिहास के सबसे कम उम्र के गोल करने वाले खिलाड़ी बन गए। म्यूनिख में खेले गए सेमीफाइनल में यमाल और दानी ओल्मो की गोल की बदौलत स्पेन ने फ्रांस को 2-1 से हरा दिया और यूरो 2024 के फाइनल में जगह बनाई। रैंडल कोलो मुआनी के नौवें मिनट में किलियन एम्बाप्पे के क्रॉस पर किए गए गोल से पिछड़ते हुए स्पेन ने चार मिनट के अंदर ही मैच का पासा पलट दिया। स्पेन ने इस टूर्नामेंट में पिछले पांच मैचों में केवल एक गोल खाने वाली टीम के खिलाफ चार मिनट के अंदर दो गोल दागे और फिर से इस बढ़त को कायम रखते हुए जीत हासिल की। यमाल यूरो कप फाइनल से एक दिन पहले अपना 17वां जन्मदिन मनाएंगे। अब फाइनल में स्पेन का सामना बर्लिन में नीदरलैंड या इंग्लैंड के खिलाफ होने वाले दूसरे सेमीफाइनल के विजेता से होगा।

यमाल ने बॉक्स के बाहर से शानदार स्ट्राइक कर गोल दागा और स्पेन को बराबरी करने में मदद की। गेंद फ्रांस के गोलकीपर माइक मैग्नन की अंगुलियों को छूते हुए गोलपोस्ट में चली गई। स्पेन ने 25वें मिनट में बढ़त बना ली जब दानी ओलमो ने नेट में गेंद को पहुंचा दिया। मिडफील्ड गेम मैनेजमेंट के मास्टर्स स्पेन ने बढ़त लेने के बाद डिफेंसिव खेल दिखाया। काउंटर अटैक के बजाय बॉल पजेशन पर ज्यादा ध्यान दिया।

तीन बार का चैंपियन स्पेन यूरो कप में छह मैच जीतने वाली पहला देश बन गया है और वह रिकॉर्ड चौथे खिताब से एक मैच दूर है।

मेदवेदेव के खिलाफ हार के साथ शीर्ष वरीय सिनर विंबलडन से बाहर, वेकिच पहली बार सेमीफाइनल में

लंदन, 10 जुलाई (एजेंसियां)। शीर्ष वरीय यानिक सिनर को दानिल मेदवेदेव ने पांच सेट तक चले कड़े मुकाबले में हराकर यहां विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के पुरुष एकल के सेमीफाइनल में जगह बनाई। मेदवेदेव ने पहला सेट गंवाने के बाद वापसी करते हुए सिनर को 6-7 (7), 6-4, 7-6 (4), 2-6, 6-3 से हराया।

सिनर के इस मुकाबले के दौरान अपने ट्रेनर से उपचार लेना पड़ा

और वह तीसरे सेट में कोर्ट से चले गए थे। यह तुरंत स्पष्ट नहीं हो पाया कि सिनर को क्या हुआ था। लॉकर रूम में जाने से पहले उनकी हृदय गति की जांच भी की गई। इटली का यह 22 वर्षीय खिलाड़ी लगभग 10 मिनट बाद वापस लौटा और फिर से खेलना शुरू किया।

क्रोएशिया की 28 वर्षीय खिलाड़ी डोना वेकिच ने यहां विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के महिला एकल के क्वार्टर फाइनल में तीन सेट तक चले मुकाबले में लुलु सन को हराकर पहली बार किसी ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया।